

## गीत

श्रीकौशल्या राणी चैत्रमास दूज चन्द्रोदय सन्ध्या को  
अयोध्या लुगाइयो करि दूध लियावते देख यों कहत भई —  
मैथिलि तेरे आवन पै बलिजासरो ।

मै बुढिड़ी को बड़ो आसरो ॥

दूध पियो मेरी प्राण प्यारी

ओटो भयो मीठो खासरो ।

आओ बेटी वैदेही बनवासिणी

चन्द्रोदय दरसातरो ॥

कर मण्डल लिए हाथ में

गेरुआ सारी ओढ़े गातरो ।

अमृत वाणी वेदवती वखाणी

वेद विराजत वातरो ॥

जानकी राणी सदां जीवती

चन्द्र वदनु चमकातरो ।

भुवन चतुर्दश राज सुख

मैथिलि रोम न समातरो ॥

कौमल फलांरी सेज पै

अंग तुम्हीं कुम्हलतारो ।

गंगा किनारे गहबर विपिन में

कांटो की सेज सुलातरो ॥

सावन भादौ की वर्षा पड़त है

पौष में हिन्य थरकतारो ।

कहां होगी बेटी भूखी प्यासी

कोपिति कम्पति गातरो ॥

शची सावित्री श्री पार्वती

लक्ष्मी नारायणु शशि भास्करो ।

नैन पुतरि ईव बेटी वैदेही की

रक्षा करनि निशि वासरो ॥

अजरु अमरु होवो श्री बालिणि

सुखु सौभाग्यु घरि वासरो ।

पदमादिप प्रसन्न रहें

अचलु होवेई अहिवातरो ॥

अई कोकिल शुक हंस सारसो

जाय देखो आश्रम हुलासरो ।

गंगा किनारे सीअ स्वामिनि विराजे

गरीबि श्रीखण्डि सचो आसरो ॥